'दलित साहित्य का मूल विद्रोही स्वर बौद्ध धर्म से'

'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसिद्ध लेखक और चिंतक मोहनदास नैमिषराय के व्याख्यान का आयोजन किया गया। 20 जून को साहित्य अकादेमी ने 'हिंदी साहित्य और बौद्ध दर्शन' पर एक व्याख्यान रखा था। मोहनदास नैमिषराय ने विस्तार से हिंदी साहित्यकारों और दलित साहित्यकारों द्वारा लिखे गए ऐसे साहित्य का विवरण दिया जो बौद्ध धर्म एवं दर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने कहा कि मेरे मत में बौद्ध धर्म सबसे पुराना वैश्विक धर्म है। बौद्ध धर्म के प्रभाव के बाद ही दलित साहित्य का मूल स्वर विद्रोही बना। उन्होंने सबसे पहली लेखिकाओं के तौर पर थेरी महिलाओं का उल्लेख करते हुए उनकी गाथाओं को संदर्भित किया और बताया कि यह उत्पीड़न के खिलाफ पहली आवाज थी। उन्होंने सरहपा, कबीर, रविदास, कश्मीर की ललद्यद आदि का उल्लेख करते हुए आधुनिक समय में भदंत आनंद कौशल्यायन, राहुल सांकृत्यायनन, जैनेंद्र कुमार, रामवृक्ष बेनीपुरी, उदयशंकर भट्ट, रांगेय राघव आदि का जिक्र किया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए। कार्यक्रम का संचालन और अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।